Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

श्री शंकराचार्यकृत सौन्दर्यलहरी तथा आचार्य अमरनाथ पांडेयरचित सौंदर्यवल्ली की दार्शनिक पृष्ठभूमि का एक सर्वेक्षण

Rajeev Kumar Gupta*

Research Scholar, Department of Sanskrit, SVN University Sagar (MP)

भूमिका – आत्मा का नित्यता के साथ साथ संसार की यथर्थता का अनुभव होना से सिद्धांत का हदय हुआ कि आत्मा कि बहा रूप से संसार को उत्पन्न करके उसमे समाहित हो जाता है। इस प्रकार यह संसार भी ब्रह्मा ही है ।सर्ब कलिवंद ब्रह्मा । क्योकि इस शरीर मे एक रूप मे ब्रह्मा ही प्रकाशित हो रहा। आत्मा का कही अभाव नही है । जीवात्मा से उपहित अथवा अवच्छिन्न है जीवात्मा बही होता है जहा जीवित शरीर होता है । किन्तु आत्मा तो मृत शरीर तथा मे विघामान है। आधयात्मिक दृष्टि से ब्रह्मा अथवा आत्मा की परम सत्ता सिद्ध है । बस्तु स्वभाव तथा आनत्य को देखते हुए जीवात्मा का अनेक अथवा बहुलता को स्वीकार करना ही तर्क संगत लगता है । बस्तुतः तीन सताए प्रतीत होता है ।१. वस्तु जगत (जड़) १. आत्मा (चैतन्य) तथा ३. ब्रह्मा (जिसके चिदंश तथा चिदानः के सयोग में शरीर की उत्पत्ति होती है । आगे चलकर ब्रह्मा का स्थान प्रकति विषयक चिन्तन में ले लिया अर्थात शरीर की उत्पत्ति होती है। आगे चलकर ब्रह्मा का स्थान प्रकति विषयक चिन्तन में ले लिया अर्थात प्रकृति ही जगत की उत्पत्ति करने वाली मानी गयी। प्रकति यघपि स्वयं जड़ है किन्तु किसी पर आश्रित न रहकर स्वतंत्र है। इसी चिन्तन के परिणाम स्वरूप सांख्य दर्सन के दैत्य बाद का उदय हुआ। (बी. एल. घाटे वेदांत 1960-इंट्रोडकशन प्रष्ट 9)

----------X----------

उपनिषदों मै जो विचार चैतन्य प्राप्त होता है वह अत्यंत गहन होता हुए भी स्वतंत्र तथा साहित्यक एवं सहज है। उपनिषदों मे प्राप्त विचार बहु आयामी है किन्तु आत्मा की नित्यता एवं परमसत्ता एक सिदांत मे कही विचलन नही है । उपनिषदों की कालक्रमानुसार स्थपना संभव नही है उपनिषदों के बहुआयामी विचरो का करके किसी एक सिदांत पर पहुचना बहुत आसान नहीं है। भेदाभेद आदि सभी चंतनो के तत्व जहाँ तहाँ विखरे मलते है फिर उसमे से मत को दूध से मक्खन की निकाल की हस्तगत करने मे भगवान शंकराचार्य को अदभूत सफलता प्राप्त हुई है। शंकर के चैतन्य न दुधारी तलवार की समस्त मत मतान्तरों को काट - छाट सम्मन्वित करके मे सफलता प्राप्त कर ली है।

1. शंकराचार्य का समय चिंतन

शंकराचार्य का आविभाव काल के सम्बंध मे आज भी विदानो मे मतैक्य नही है। इसका प्रकार कारण शंकराचार्य का अपने ग्रंथो मे कही भी इसी परंपरा का निर्वाह करियर है। अतः शंकराचार्य के आविर्भाव काल का निर्धारण करके मे अनेक मंतो के हदय हुआ। कुछ प्रमुख मंतो के आधार पर उनके काल को निर्धारित करने का प्रयास किया गया है अधिकांश विद्रानो ने इन्हे ६०० ई. से ९०० ई के मध्य मे प्रयास किया है।

कुछ आभ्यन्तर प्रमाणों के द्रारा यह कहा जाता है कि शंकराचार्य अष्टम शताब्दी एक मे महासमाधि को प्राप्त हो गये। प्रायः विदानो ने ऐसी मत को स्वीकार किया है ।

1. करलोपति नामक ग्रन्थ के अनुसार शंकराचार्य का आविर्भाव काल ४०० ई. है । इस मत मे आचार्य की आयु बत्तीस वर्ष न मानकर अड़तीस वर्ष मानी गयी है ।

2. काँची कामकोटि पीठ, ज्योतिषपीठ एवं दारिका मठ की गुरू परम्परानुसार शंकराचार्य को आविर्भाव ईस्वी पूर्व पंचम शताब्दी प्रतीत होता है। आधुनिक युग के

www.ignited.in

भारतीय इतिहास के प्रसिद्ध विदान प्रो. पी. एन. ओक ने भी इसी मत की पुष्टि की है।

3. आर . जी.भंडारकर के अनुसार शंकराचार्य का जन्म ६८० मे हुआ था ।

4. बनैल तथा सिवेल का अनुसार शंकराचार्य का आविर्भाव सातवीं शताब्दी मे हुआ था ।

5. वर्तमान समय मे श्री राजेन्द्र नाथ घोस ने विभिन्न प्रकार के प्रमाणों से यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि शंकराचार्य शक सम्वतं ६०८ या ईस्वी ६८६ मे इस्वी हुए थे तथा इसका तिरोभाव चौतीस वर्ष की आयु मे हुआ था ।

2. सौन्दर्यलहरी स्तोत्र काव्य का परिचय

सौन्दर्य लहरी शंकराचार्य की विलक्षण कृति है जो स्तोत्र काव्य के गुणों से तो समलकृत है ही तन्त्र और दर्शन का भी अनूठा ग्रंथ है । इसमें भगवती जगदम्बा का आघाशक्ति तथा उसमे भी बढ़कर साक्षात चिति शक्ति के रूप में निरूपण हुआ है ।

वेदान्त की दृष्टि से वही शक्ति कारण ब्रह्म है तथा प्रकृति की राजस , सात्विक एवं तामस रुपी करयित्री पालयित्री एवं नारयित्री शक्तियों से संवलित ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के रूप में कार्यब्रहा है । सौन्दर्यलहरी मुख्यतः कलात्मक रचना है इसमें भगवती जगदम्बा के अनिन्ध सौन्दर्य का नखशिख चित्रण करते हुए उनके प्रति भक्ति भावना की बड़ी ही पुष्कल अभिव्यक्ति हुई है ।

सौन्दर्यलहरी में आचार्य शंकर की काव्य प्रतिभा का स्फुरण चरमोत्कष रूप में हुआ है । भरतमुनि के अनुसार जगत में जो भी मेध्य, पवित्र , उज्जवल एवं दर्शनीय है उस सबका उपमान श्रृंगार है । इस उचित का जितना उपयुक्त निदर्शन भगवती की रूप राशि के वर्णन में सौन्दर्यलहरी में उपलब्ध होता है उतना अन्यत्र किसी भी किसी भी महाकवि की रचना में नहीं होता, अतएव इस कृति को संस्कृति गीति काव्य का शिखर बिन्दु माना गया है ।

सौन्दर्यलहरी मूल रूप से एक प्रबल भक्ति भावना प्रधान काव्य है यघपि इसमें तान्त्रिक विचारों का भी समावेश देखा जाता है । ईश्वर के विषय में वैदिक एवं तान्त्रिक विचारधराओं में कोई अंतर नहीं होता है । तन्त्र में शिव और शक्ति की जो अवधारणा है वह पुरुष और प्रकृति की वैदिक विचारधारा तथा अदैत वेदान्त की ब्रहा एवं माया विषयक विचारधारा से भिन्न नहीं है। विवेकानन्द के शब्दों में परब्रहा का कोई आकार नहीं होता है किन्तु जो परम शक्ति है वह नारी स्वरूपा है। जब शक्ति साकार होती है तब वह मातृशक्ति स्वयं गतिशील है और वह ब्रहा को भी गतिशील बना देती है। वह परमसत्ता की शान्त जलराशि में लहरी का क्षोभ उत्पन्न कर देती है । इसी गत्यात्मक शक्ति के बल से वह निराकार अनन्त परमात्मा नाम रूपतामक सृष्टि में परिवर्तित हो जाता है|

'आथर अवेलान' के अनुसार शक्ति के साथ शक्तिमान की अवधारणा स्वयं सिध्द है और यह शक्तिमान की अवधारणा स्वयं सिद्ध है । शक्ति के बिना शिव की कल्पना नहीं की जा सकती हैं और न ही बिना शिव के शक्ति की कल्पना सम्भव हैं ये दोनों शिव और शक्ति की कल्पना सम्भव हैं ये दोनों शिव और शक्ति अपने आप में एक हैं । दोनों सत चित और आनन्द स्वरूप हैं ।

'शैक्षिक संस्थानों की सदस्यता

प्रो. पाण्डेय सन 1968 से ही अखिल भारतीय प्राचय विघा सम्मलेन के सम्मानित सदस्य रहे | 24 वा, अधिवेशन वायाणसी 1968 25 वा अधिवेशन , यादवपर, कलकत्ता 1970 , 26 वा अधिवेशन उज्जैन 1972 ,27 वा अधिवेशन, कुरुक्षेत्र 1974 , 28 वा' अधिवेशन घारवाड़ 1976 एवं 29 वा' अधिवेशन, पूना 1978 , विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । इन सम्मेलनों में प्रो, पाण्डेय ने अपने शोध-9त्र पढ़े या प्रस्तुत किए। अखिल भारतीय प्राच्य विघा सम्मलेन 1980-82 में सदस्य रहे | 34 वें अखिल भारतीय प्राच्य विघा सम्मलेन विशाखपट्नम 1989 में भारतीय भाषा विज्ञान[29] सत्र की अध्यक्षता की । 35 वें अखिल भारतीय प्राच्य विघा सम्मलेन गुरुकुल कागड़ी 1998 में अध्यक्षता की ।[30] 1990 -92 तथा 1995 -92 तथा 1995 -96 में अखिल भारतीय प्राच्य विघा सम्मलेन के कार्यकारिणी के सदस्य रहे । 39 वें अखिल भारतीय प्राच्य विघा सम्मलेन 1998 में महाकाव्य और पुराण विभाग ' की अध्यक्षता की । विश्व संस्कृत सम्मलेन के वाराणसी , आस्ट्रेलिया (मेलबोर्न) तथा बंगलौर के सम्मेलन में भाग लिया, शोध पत्र प्रस्तुत किया तथा व्याकरण सत्र की अध्यक्षता की।

3. शंकराचार्य का अदेतवाद

भारतवर्ष की विचारधारा में अदेतवाद का इतिहास बहुत प्राचीन हैं । वेदान्त के सभी सम्प्रदायों की भांति अदुैतवाद की परम्परा का आरम्भ 'ब्रहासूत्र' से होता हैं। ब्रहासूत्र के रचयिता बादरायण व्यास को माना जाता हैं। जीव, जगत और ब्रहा के वास्तविक स्वरूपों का विवेचन तथा उनके पारस्परिक संबन्धों की मीमांसा करना वेदान्त दर्शन का प्रतिपाघ विषय हैं। वेदान्त ने सांख्य के

www.ignited.in

प्रकृति पुरुष रूपी दैधीभाव को मिटाकर उनका समावेश एक परम तत्व ब्रहा में किया हैं । वेदान्त दर्शन के अदुैतवाद सिध्दान्तका भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के क्षेत्र में अत्यधिक महत्पूर्ण उपनिषदों में प्राप्त होने वाला अदुैतवाद, शैवागमों व् अदुैतवाद, भतहरि दा ुरा प्रतिपादित शब्दादैतवाद, गौड़पादिय अदुैतवाद, शांक्य अदुैतवाद, रामनुजीय विशिष्टादेतवाद, बल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैतवाद निम्बार्काचार्य के देतादैतवाद सिध्दांत का न्यूनाधिक स्पर्श मिलता हैं परन्तु समस्त सिध्दांतो में शांकरअदैतवाद के अन्तगर्त अदेतवाद का पूर्णता सैध्दान्तिक, सुव्यवस्थित एवं सामन्यस्यपूर्ण प्रतिपादन मिलता हैं । दर्शन के क्षेत्र शांकराद्वैतवाद का सर्वाधिक महत्त्व हैं। जब वेदान्त दर्शन की चर्चा होती हैं उसमे प्रायः शांकर दर्शन का ही अर्थ ग्रहण किया जाता हैं।

अदैत वेदान्त की सर्वप्रमुख रचना हैं - आचार्य शंकर का ब्रहासूत्र पर भाष्य जो शांकर भाष्य' के नाम से जाना जाता हैं। अदैतवाद का प्रतिपादन शंकराचार्य से पूर्व गौड़पाद कर चुके थे परन्तु शंकर अदैत वेदान्त के क्षेत्र इतना छा गये कि अदैत वेदान्त को प्रायः शांकर वेदान्त के नाम से ही जाने लगा । न केवल भारतीय वरन विश्व के सर्वोच्च दार्शनिको में शंकर का नाम एक अदभुत विचारक के रूप में स्वीकार किया गया हैं। ज्ञानमार्गी दार्शनिको में सबसे अधिक ख्याति शंकराचार्य को प्राप्त हुई।

4. सर्वेक्षण

श्री शंकराचार्य जो ने सौन्दर्य लहरी में भगवती के सगुण रूप की उपासना की हैं । इस महनीय ग्रंथ में पद पद में मन्त्रत्व निहित हैं । यन्त्र तथा तन्त्र की दृष्टि से मंत्रो की व्याख्या प्राचीन टीकाओं में विशद रूप में की गई हैं । टीकाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता हैं कि भगवान् शंकराचार्य के पदावली में देवी के अनन्त रहस्य उनकी शक्तियाँ तथा महिमा प्रकाशित हैं। श्रीशंकर के समस्त वेदान्त दर्शन का प्रति पादन सौन्दर्यलहरी में देखा जा सकता हैं।

शिव और शक्ति के अभेद तथा परस्पर अपेक्षिता तथा शक्ति के कल्याणकारी स्वरूप का दर्शन सौन्दर्यलहरी में जिस प्रकार से प्राप्त होता हैं । वैसे अन्यत्र कहीं नहीं हैं।

दुर्गासप्तशती में शक्ति के ओजस्वी स्वरूप का दर्शन होता हैं। शत्रुनाश करने में दक्ष भगवती के स्वरूप को ऋषि ने प्रकाशित किया हैं । भोग तथा उपवर्ग दोनों को देने वाली भगवती दुर्गा भक्त के समस्त तापों का नाश करती हैं। वे ज्ञान तथा विज्ञान दोनों ही देने वाली हैं।

आचर्य शंकर की सौन्दर्य लहरी में सम्पूर्ण सत्य, सुन्दर तथा शिव का भूमा रूप देखने की मिलती हैं। जिस ब्रहा को निगुर्ण निराकार कहकर अदैत सिध्दान्त को स्थापना हुई उसी ब्रहा का परम ललित नारी रूप सौन्दर्य लहरी में प्रकाशित हुआ। जो इस रहित तर्कनायें थीं वे सबके सब भक्ति रस में डूबी स्तुतिया बन गई।

जिस शक्ति स्वरूपा त्रिपुर सुन्दरी के बिना वह परमशिव भी शव की भाति निषिक्रय तथा असुन्दर हो जाता है उसकी स्तुति करने का सौभाग्य उसी को प्राप्त होता है जिसका पुण्य उदय होता है। "प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृत पुण्यः प्रभवति"। श्रीशंकराचार्य भगवती के शिशुभाव को प्राप्त हो गये है। भगवती के स्तनों से स्वतः स्पन्दमान रसामृत का सागर उमड़ पड़ा है । अपने नवजात शिशु को माता की भांति भगवती गिरीश कन्या ने द्रविड़ प्रदेश में उत्पन्न हुए आचार्य को कृपा करके पिला दिया है । तभी तो वह प्रौढ़ कवि बनकर सौनदर्यलहरी काव्य की सृस्टि करने वाले हो गये है। भगवती के स्तनों से स्वतः स्पन्दमान रसामृत का सागर उमड़ पड़ा है। अपने नवजात शिशु को माता की भांति भगवती गिरीश कन्या ने द्रविड़ प्रदेश में उत्पन्न हुए आचार्य को कृपा करके पिला दिया है । तभी तो वह प्रौढ़ कवि बनकर सौन्दर्यलहरी काव्य की सृस्टि करके वाले हो गये है।

भगवती के जिन चरणों को वेद अपना शिरो भूषण मानकर मस्तक पर धारण करते हैं तथा जिन चरणों से उतरे जल को भगवान शिव अपने जटाजूट प्रवाहित करते हैं और जिन चरणों में सजे हुए लाक्षारस की शोभा का वैभव भगवान विष्णु के सिर पर अंकित होता है उन चरणों को भक्त कवि अपने सिर पर धारण करने की आकांक्षा रखता है ।

भगवती ललिता त्रिपुर सुन्दरी, सुधासागर के बीच देव वृक्षो की वाटिका से आवृत मणियों के दीप में नीप के उपवन से धिरे चिन्तामणि के मन्दिर में शिवाकार मंचपर स्थित परमशिवरूप पचांग पर नित्य विराजमान हैं जिनके अंग - अंग की आभा चिदानन्द की जीरे प्रवाहित हो रही हैं। भक्त कवि श्री शंकराचार्य उन्हीं महेश्वरी का भजन कीर्तन करने में प्रवृत्त हैं । सौन्दर्यलहरी शरणागति एवं प्रेमाभक्ति की परकाष्ठा का निदर्शन हैं। जहाँ शक्ति शिव का शरीर हैं जिसमें चन्द्र-सूर्य ही उरोज हैं। शिव और शक्ति में शेष और शेषी का सम्बंध शाश्वत हैं । दोनो समरसता और शक्ति में शेष और शेषी का सम्बंध शाश्वत हैं । दोनो समरसता और परानन्द में पर्यवसित हैं।

www.ignited.in

सैन्द्रर्यलहरी में श्रीशंकराचार्य, ने रस का जो सागर छलकाया है उनसे परवर्ती समस्त वेदान्त चिन्तनों तथा मतमतान्तर का खण्डन- मण्डन दृश्टिगोचर नहीं होता है।

5. आत्मकथा

दर्शन की परिभाषा एवं स्वरूप -

दर्शन शब्द 'दृश' धातु (देखने) से करणाथक ल्युट प्रत्यय लगकर निष्पन्न हुआ है जिसका

व्युतपत्ति लभ्य अर्थ है दृश्यते नेन इति दर्सनम अर्थात जिसके द्वारा देखा जाए । देखने एक स्थूल साधन नेत्रेन्द्रिय द्वारा दर्शनो एक अनुसार दर्शन काल अभिप्रेत देखा हुआ ज्ञान चाक्षुष प्रत्यक्ष ज्ञान ही है जबकि सांख्यादी सुक्षम दर्शनो का मत है कि कुछ पदार्थ ऐसे भी है जिसका

चाक्षुष प्रत्यक्ष नहीं हो सकता, उसके लिए सुक्षमदृष्टि, तात्विक बुद्धि की आवश्यकता होती है इस सुक्षम दृष्टि या तात्विक बुद्धि को ही प्रज्ञा चक्षु, ज्ञान चक्षु या दिव्य दृष्टि कहते है, इस मत में दर्शन शब्द का अर्थ हुआ -जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाये ।

पं० श्री चक्रेश्वर भटाचार्य दर्शन शब्द निष्पत्ति दर्शनाथाक दृश धातु में अनट' प्रत्यय के योग से करते है तथा दर्शन का अर्थ करते है - दिखाई देने वाला पदार्थ।

ब्रहा तथा जगत दोनों ही दर्शन की विषय है । त्रिकालदर्शी आत्म ज्ञानी ऋषियों तथा मुनियो द्वारा ज्ञान चक्षु से ब्रहा एवं जगत का दर्शन - विवेचन किया गया है । उन्हीं त्रिकालदर्शी , आत्मदर्शी तथा आत्म शक्ति से युक्त आत्म प्रकाश से उद्भासित अन्तःकरण वाले मुनियो तथा महर्षियो द्वारा कहे गए शास्त्र को दर्शन शास्त्र कहते है जिसमे विश्व तथा ब्रहा दोनों का सुक्षममतिसुक्षम एवं विशद विवेचन प्राप्त होता दर्शनार्थन - दृश्य धातोरनट, दृश्यते तदेतदिति दृश अनट दर्शनम अर्थात तद ब्रहा एतद विश्वम अनेन-ज्ञानचक्षुषा त्रिकालदर्शिभिः आतमज्ञे ऋषिभिमुरनि भिहिर्दशीते , इति दर्शनम । तथा च त्रिकालदर्शिभिरातमऋ रात्मनिष्टशक्तिमदिभमुनिभिमहर्षिभिभारीषितं विश्व ब्रहा निरूपक शास्त्र दर्शन -मिति सिध्दम॥

दर्शन शब्द का अंग्रेजी में अनुवाद प्रायः फिलोसोफी ' शब्द से किया जाता है । यह शब्द 'फिलॉस ' ओर 'सोफिया ' इन दो ग्रीक पदों से बना है इसका क्रमशः अर्थ है प्रेम ओर सरस्वती या विघा देवी । अतः फिलोसोफी का अर्थ हुआ विघा -प्रेम ज्ञान की प्रति अनुराग ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

दुर्गासप्तशती - सप्तटीका युक्त हरिकृष्ण शर्मासंगहीत - चौककम्भा विघा भवन बाराणसी 2000

दुर्गासप्तशती - पः रामतेज पांडेय शास्त्रीकृत हिन्दी विघा भवन , बाराणसी 2000

भक्ति मीमांसा - डॉ. रसिक बिहरी जोशी – पण्डित रामप्रसाद पब्लिकेशन, दिल्ली , 2000

शकित भाष्यम - (ब्रह्मसूत्र भाष्य) पंचानन तर्करत्न भट्टाचार्य - परिमल पब्लिकेशन,दिल्ली 2000

शंकराचार्य चरितं - निगमबोध तीर्थ परिमल पब्लिकेशन,दिल्ली 2001

तन्त्र संग्रह - गोपीनाथ कविराज - सम्पर्णानंद संस्कृत विश्वविधालय 2001

शंकराचार्य - उनके मायावाद तथा अन्य सिध्दांतो का आलोचनात्मक अध्ययन प्रो राममूर्ति शर्मा - ईस्टर्न बुक लिंकर्स , दिल्ली(1989)

सौन्दर्यलहरी - (शंकराचार्य प्रणीत) डॉ. विनोद अग्रवाल ईस्टर्न बुक लिंकर्स , दिल्ली 1986

श्री शंकराचार्य - सौन्दर्य लहरी - लष्मीधरा , सोभाग्य वर्धनी अरुणामोदिनी, आनंदगिरीया

तात्पयदीपिनी, पदाथचंद्रिका , गोपालसुंदरी ,आनंदलहरी, टीकाओ के साथ सम्पादक - कुप्पूस्वामी (1991) नागपब्लिशस (दिल्ली)

Corresponding Author

Rajeev Kumar Gupta*

Research Scholar, Department of Sanskrit, SVN University Sagar (MP)

www.ignited.in